

शाहन जो शाहु (१५७)

अध राति जाओ गुरु नानक शाह ।

कालूअ जे घर तिलवण्डी शहर ॥

वियो मुलिक में पापु वधी भारी पृथ्वी अ भी बणाई देहि गाइ वारी ।

सन्तनि जे समाज में वेई सारी वर्जों सच खण्ड में विनय उचारी ॥

कती महीनो हुई पूरण माशी आयो कालू अ घर सचिखण्ड वासी ।

जाओ तिलवण्डी अ सचो अविनाशी दिसी खुशि थिया मासड़ मासी ॥

दिसी मुहड़ो खुशि थिया माई भाई वरी घर घर में अजु वाधाई ।

घोरूं घोरे पई त्रिप्ता माई सोनी मुण्डी वठी खुशि थी दाई ॥

आया मंगता बणाए पंहिजी टोली कालू अ घर सुहिणी ठाहे टोली ।

जैराम दिनी गुरु अ खे लोली सारी संगति दियनि आशीश अमोली ॥